गेहूं पर खतरा गहराया

ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि गेहूं की फसलों को चौपट करने की क्षमता रखने वाली एक बीमारी अनुमान से पहले ही दक्षिण एशिया के खेतों पर हमला कर देगी। आसार हैं कि गेरुआ रोग वैज्ञानिकों के अनुमान से दो वर्ष पहले ही आ धमकेगा। यदि ऐसा हुआ तो लाखों लोग भुखमरी के शिकार हो सकते हैं।

गेरुआ रोग एक फफूंद *पक्सिनिया ग्रेमिनिस* के कारण होता है। पिछले वर्षों में यह रोग काफी नियंत्रण में था। मगर इस फफूंद की एक प्रतिरोधी संक्रामक किस्म यूजी-99 को यूगाण्डा में 1999 में देखा गया था। आज इस्तेमाल की जा रही गेहूं की किसी भी किस्म में इससे लड़ने की क्षमता नहीं है। 1999 में यूगांडा में देखे जाने के बाद यह फफूंद कीन्या व इथियोपिया में देखी गई और पिछले वर्ष इसने यमन में धावा बोल दिया था।

फफूंद की प्रगति को देखते हुए वैज्ञानिकों का अनुमान था कि यूजी-99 के बीजाणु हवा के साथ उड़कर मिस्र, तुर्की और सीरिया पहुंचेंगे। यहां से इस फफूंद के ईरान पहुंचने की आशंका थी। मगर 8 जून 2007 के दिन अरब प्रायद्वीप में एक ज़बर्दस्त तूफान आया था, जिसने हवाओं की दिशा बदल दी थी। इसके चलते यह फफूंद अनुमान से दो वर्ष पूर्व ही ईरान पहुंच गई है।

इस फफूंद की फितरत ऐसी है कि गेहूं के पौधे पर तो यह अलैंगिक प्रजनन करके अरबों हूबहू एक-से बीजाणु पैदा करती है मगर यदि ये बीजाणु एक अन्य पौधे *बार्बेरिस वल्गेरिस* पर पहुंच जाएं, तो लैंगिक प्रजनन करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में ये अन्य फफूंदों के साथ जीन्स का लेन-देन कर सकते हैं तथा और भी संक्रामक साबित हो सकते हैं। ऐसी नई फफूंद किस्मों के खिलाफ गेहूं में कोई प्रतिरोध नहीं होता। यदि ऐसा हुआ तो गेहूं की शामत आ जाएगी।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस समस्या का एक ही पक्का समाधान है। उनके मुताबिक आज तक गेहूं की जितनी भी किस्में इस्तेमाल की गई हैं, उनमें फफूंद-रोधी एक ही जीन होता है। इसकी वजह से फफूंद में प्रतिरोध पैदा होने की संभावना बहुत अधिक होती है। इसलिए गेहूं की ऐसी किस्में विकसित करने की ज़रूरत है जिनमें ऐसे कम से कम तीन जीन्स हों। गेहूं की कुछ किस्मों में इस तरह की संभावना देखी भी गई है। इस दिशा में कोशिशें शुरू भी हो गई हैं। मगर नई किस्में तैयार करने में समय लगता है। कारण यह है कि एक तो फफूंद-रोधी किस्म तैयार करना होता है, फिर इसके आधार पर ऐसी किस्में विकसित करनी होती हैं जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल हों।

वैसे चीन इस संदर्भ में काफी आगे है। उसने एक क्रैश कार्यक्रम शुरू किया है जिसके तहत गेहूं की किस्मों में यूजी-99 प्रतिरोध विकसित किया जाएगा। अन्य देशों में भी ऐसे युद्ध स्तरीय कार्यक्रम शुरू होने चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***